HIN3B18a_cours-06-2013-02-28-Mohan-Rakesh

मोहन राकेश (अमृतसर 8/1/1925- दिल्ली 3/1/1972)

मोहन राकेश नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख लेखक हैं। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी और अंग्रेज़ी में एम.ए. किया। ज़िंदगी चलाने के लिये अध्यापन का काम किया। कुछ वर्षो तक 'सारिका' के संपादक रहे। इन्हें 'संगीत नाटक अकादमी' से सम्मान मिला। 3 जनवरी 1972 को इनका आकस्मिक निधन हो गया। मोहन राकेश ने कहानियों के अलावा कई नाटक और उपन्यास लिखे। मोहन राकेश की कहानियों की विषय-वस्तु समाज के किसी संवेदनशील व्यक्ति और समय के प्रवाह के बीच का सम्बन्ध है। मोहन राकेश की डायरी हिंदी-साहित्य की सुंदर कृतियों में मानी जाती है।

मोहन राकेश की रचनाएँ पाठक के दिल को छू लेती हैं। ऐसा कहा जाता है कि जो कोई एक बार उनकी रचनाएँ पढ़ता है तो वह पूरी तरह से मोहन राकेश के शब्दों में डूब जाता है। मोहन राकेश के उपन्यास ‘अँधेरे बंद कमरे’, ‘ना आने वाला कल’, ‘अंतराल’ और ‘बाकलमा खुदा’ हैं। इसके अलावा ‘आधे अधूरे’, ‘आषाढ़ का एक दिन’ और ‘लहरों के राजहंस’ उनके मशहूर नाटक हैं।

मोहन राकेश को कहानी के बाद सफलता नाटक लिखने में मिली। हिंदी नाटकों में भारतेंदु और प्रसाद के बाद का दौर मोहन राकेश का दौर है जिसने हिंदी नाटकों को फिर से रंगमंच से जोड़ा। हिन्दी नाट्य साहित्य में भारतेन्दु और प्रसाद के बाद यदि लीक से हटकर कोई नाम उभरता है तो मोहन राकेश का। इसलिए ही नहीं कि उन्होंने अच्छे नाटक लिखे, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने हिन्दी नाटक को अँधेरे बन्द कमरों से बाहर निकाला।

मोहन राकेश के दो नाटकों ‘आषाढ़ का एक दिन’ तथा ‘लहरों के राजहंस’ में पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है फिर भी इनमें आधुनिक मनुष्य के अंतर्द्वंद और संशयों की ही गाथा है। एक नाटक की पृष्ठभूमि गुप्तकाल है तो दूसरा बौद्धकाल के समय के ऊपर लिखा गया है। ‘आषाढ़ का एक दिन’ में सफलता और प्रेम में एक को चुनने के द्वन्द से जूझते कालिदास एक रचनाकार और एक आधुनिक मनुष्य के मन की पहेलियों और दुविधाओं को सामने रखते हैं। मोहन राकेश ने हिंदी साहित्य को एक अविस्मरणीय महिला पात्र दिया है जो प्रेम में टूटकर भी प्रेम को न टूटने देना चाहती है। मोहन राकेश ने ‘लहरों के राजहंस’ में और भी मुश्किल सवाल उठाए हैं। उदाहरण के लिए जीवन की सार्थकता, भौतिक और अध्यात्मिक जीवन के बीच द्वन्द, अपने मत को दुनिया पर थोपने का आग्रह आदि। राकेश के नाटकों को रंगमंच पर मिली शानदार सफलता इस बात का गवाह बनी कि नाटक और रंगमंच के बीच कोई खाई नही है।